बाप बच्चों को समझाते हैं ड्रामाप्लान अनुसार। और कोई समझा नहीं सकते। जिनको जो पार्ट मिला हुआ है वो ... बजावेगा। बाप को सब याद भी करते हैं, पूजा भी करते हैं। बेहद के बाप से बेहद का सुख। हद के बाप से हद का सुख मिलता है। सतयुग में अथाह सुख था। नई दुनियां है ना। बच्चे जानते हैं कि अब बेहद का बाप मिला है। निश्चय बिगर यहाँ कोई आ नहीं सके। कहेंगे कि हम बापदादा के पास जाते हैं। बाप शिव, दादा है ब्रह्मा। वर्सा एक से मिलता है। वो एक बाप अनेक बच्चों को वर्सा देते हैं। यही एक बेहद का बाप स्वर्ग का रचता है। उनसे स्वर्ग का ही वर्सा मिलता है। यहाँ पर कोई शास्त्र आदि नहीं सुनाये जाते हैं। ना ही कोई साधु–संत आदि ही है। बाप सच्चा है तो तुम बच्चों से भी सच्ची सर्विस ही करवाते हैं। तुम सबको स्वर्ग का रास्ता बताते हो। अभी नर्क का द्वार बंद होकर स्वर्ग का द्वार खुलता है। सतयुग है स्वर्ग का द्वार। कलियुग है नर्क का द्वार। स्वर्गवासी ही पुनर्जन्म लेते–2 नर्कवासी बनते हैं। अब बाप आया है। बच्चे जानते हैं कि बाप जरूर हमको स्वर्गवासी ही बनावेंगे। ब्र.कु.कु. ..... को स्वर्ग .... रही हैं। अकेला तो नहीं करेगा और बच्चों को भी मददगार बनाते हैं। गाया जाता है हिम्मते मरदा मददे बाप। कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। खाद पड़ी हुई है। वो निकल जावेगी। तमोप्रधान से तमो, फिर रजो फिर सतो। सतो से फिर सतोप्रधान बनेंगे। फट से सतोप्रधान नहीं बनेंगे। सीढ़ी चढ़ने में भी समय लगता है। माया के विघ्न कितने आते हैं। बाप जो 21 जन्मों का वर्सा देते हैं उनको तुम भूल जाते हो। हम भाई–बहनें अपने तन–मन–धन से इसमें खर्चा करते हैं। फिर बाबा से हम सब बदल कर तन–मन–धन नया लेते हैं। बाबा जैसे कि करणीगोर है। तुमसे पुराना लेकर नया सब दे देते हैं। इसलिए उनको दाता कहा जाता है। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलेगा। हमको वर्सा पहले लेना है याद की ताकत से। बेहद का बाप एक ही है। उनका बनने से बेहद का वर्सा मिलता है। बाप कहते हैं कोटों में कोऊ पहचानते हैं। अपने को ही नहीं जानते हैं हम आत्मा कहाँ से आई हैं, कैसे पार्ट बजाते हैं– यह किसी को भी पता नहीं है। तुम अभी जानते हो कि आत्मा बिंदी है। तुम (को) फखुर रहना चाहिए कि हम यहाँ नर से नारायण बनने लिए पढ़ रहे हैं। सच्चे बाप से बेहद की कथा सुनते हैं। झूठी कथायें तो बहुत सुनते ही आये हैं। बाबा कोई गीता थोड़े ही रचते हैं। वो तो पतित (को) पावन बनाते हैं। मैं गीता नहीं सुनाता हूँ। राजयोग सिखाता हूँ तुम बच्चों को। किसी को कह भी नहीं सकता हूँ कि यह–2 शास्त्र बनाओ। यह तो खतम होने हैं। मनुष्यों ने बहुत शास्त्र आदि बैठ बनाये हैं। बाप तो सेकेंड में जीवनमुक्ति का वर्सा देते हैं। बच्चे बने (और) बाप के वारिस बन गये। स्वर्ग में (जरूर) जावेगा। सिर्फ ऊँच पद पाने का पुरुषार्थ करना है। बाप का परिचय बहुतों को दो। बाप कहते हैं शिव के मंदिर में जाकर परिचय दो– यह बाप है। होकर गये हैं तब तो शिवजयंती मनाते हो। तुम बताते हो कि यह शिवजयंती 31वीं चली आ रही है। किसी को भी यह अक्ल नहीं है जो पूछे कि यह क्या मनाते हो। यह आप समय कैसे देते हो। समझते ही नहीं हैं। प्रदर्शनी में इतने सब आते हैं, समझते थोड़े ही हैं। यह भी लिखते हो कि यही 5000 वर्ष पहले भी दिखाई थी तो (गजब) खाना चाहिए ना। तुम समझाते हो कि पुरानी दुनियां का अब विनाश होना है। विनाश होने से पहले अपने को लायक बनाना है। (सतो)प्रधान बनकर राजाई करनी है। भगवानोवाच्य है कि राजयोग सिखाता हूँ। फिर भी बंदरबुद्धि समझ नहीं सकते हैं या बच्चे पूरा समझा नहीं सकते हैं। इतने ब्र.कु.कु. से पूछे ना कि इतने क्यों हैं? क्यों कहलाते हैं? बाप ब्रह्मा द्वारा हमको नर्कवासी से स्वर्गवासी बनने लायक बनाते हैं। हम राजऋषि हैं। ऋषि पवित्र रहते हैं। फिर हम भविष्य 21 जन्मों लिए पवित्र राज्य में ..... करते हैं। ..... कि पहले तो पवित्र बन बाप को याद करना है। जितना याद करेंगे उतना ही .....गले में पिरोये जावेंगे। फिर विष्णु के गले का हार बनेंगे। ब्राह्मणों .....। गुडनाइट।